मथुरा प्रसाद 'नवीन'

मथुरा प्रसाद 'नवीन' के जनम 1928 में मुँगेर जिला के बड़हिया गाँव में होल हल। अब ई लखीसराय जिला के अन्तर्गत आवऽहे। इनकर सिच्छा मैट्रिक तक ही भेल हल। ई 1942 के आंदोलन में कूद पड़लन। इनकर काव्य संगरह के नाम **'रुदन का गान'**, **'पानी का बुलबुला'**, **'चुनाव का हुड़दंग'** आदि हे। ई तीनो संकलन हिन्दी भासा में हे । इनकर ख्याति प्रगतिसील कवि के रूप में होल हे।

पहिले अँग्रेज लूट-खसोट, अत्याचार आदि करऽ हल, तब लोग ओकरा विदेसी अत्याचार कहके विरोध आउ बर्दास्त करऽ हलन। बाकि जब देस के लोग भी उहे राह के राही हो गेलन तब भारतीय जनता के मोहभंग हो गेल। कुंठा, संत्रास, टीस, कसक, पीड़ा, यातना आदि आधुनिक कविता में वर्नित होवे लगल । **'राहे-राह अन्हरिया कटतौ'** कविता में कवि मथुरा प्रसाद नवीन किसान के दर्द के स्वर देलन हे। किसान के गरीबी, तड़प, दुर्दसा देखके कवि के काया मछरी नियर छटपटाए लगऽ हे। कवि 'चल रे गोला ! चल रे मैना' कहके जल के प्रवाह नियन ओकर गति के चंचलता आउ निरंतर गतिसीलता पर ही अर्थ व्यंजित कइलन हे। युग बोध आउ युग चेतना एकरा में प्रतिबिंबित भेल हे। ई मगही के कबीर कहल जा हथन।

राहे-राह अन्हरिया कटतौ

चल-रे गोला ! चल-रे मैना ! राह में कखनौ अटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

चल जल्दी चल गाँव दूर हो, अभी तो आधे ऐले हें ;
दिन दमकस भर दौनी करके, साँझे सानी खैले हें ।

चल दौड़ल चल, चल लपटल चल, मस्त बनल रह मटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

हमकी करियौ दाना-खल्ली, घी-मक्खन तो सपना हौ ;
तोरा छोड़ ई गरीब के, कोई न जग में अपना हौ ।

तोही हम्मर भाग-किरन हें, चाँद गगन में चटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

पढ़े साल परती पड़ गेलौ, एक्को बूँट उपजलो नै ;
नै लगलौ नख नेह महावर, ढोल पिपहिया बजलो नै ।

बेटी रहल कुमार, कुंडली देखल गेल उलटके नै ;
राहे-राह अन्हरिया कटतौ, काँधा अप्पन पटके नै ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'गाँव दूर हो' के अरथ का हे ?
   (ख) कवि गरीब केकरा कह रहलन हे, आउ काहे ?
   (ग) ढोल पिपहिया काहे न बजल ?
   (घ) बेटी कुमार काहे रह गेल ?
   (ङ) कवि के भाग-किरन के हे ?

लिखित :

1. 'राहे-राह अन्हरिया कटतौ' कविता के कवि मथुरा प्रसाद 'नवीन' के परिचय दऽ।
2. कविता के उद्देस्य पर परकास डालऽ।
3. कवि राहे-राह अन्हरिया काटेला काहे उताहुल हे ?

भासा-अध्ययन :

1. पाठ में प्रयुक्त बिम्ब आउ प्रतीक बतावऽ।
2. कविता में आयल मुहावरा चुन के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. ई बतावऽ कि कवि मथुरा प्रसाद 'नवीन' प्रयोगसील भावना के कवि हथ, कइसे ?
2. निम्नलिखित के संदर्भ सहित आसय लिखऽ ?

   ''हम की करिऔ, दाना-खल्ली
   घी-मक्खन तो सपना हौ
   तोरा छोड़ के ई गरीब के
   कोय न जग में अपना हौ''

3. प्रगतिवाद के बारे में चार पंक्ति में अप्पन विचार प्रकट करऽ ।
4. तोरा विचार से कवि मथुरा प्रसाद नवीन के कविता प्रगतिवादी, रहस्यवादी इया प्रयोगवादी हे ?
5. चल रे गोला ! चल रे मैना ! केकरा कहल गेल हे ?

सब्दार्थ :

करिऔ	—	करूँ
कोय	—	कोई
जग	—	संसार
परेसाल	—	पिछला साल
परती पड़ना	—	कोई उपज न होना
नख नेह महावर लगना	—	साज-सिंगार करना
पिपहिया	—	एगो बाजा के नाम
दमकस	—	औकात भर
सानी	—	गौत, खाना-बुतात
दौनी	—	दमाही ।

●●●